NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.H.D.-9

कहानी : स्वरूप और विकास

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Archana Sisodia,* M.A., M.Phil, Ph.D. (Hindi)

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

कहानी : स्वरूप और विकास

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

कहानी के सिद्धान्त और स्वरूप

1. कथा और आख्यान के विभिन्न रूप 1
2. कहानी का अर्थ और स्वरूप 9
3. कहानी और अन्य गद्य विधाएँ 16
4. हिन्दी कहानी का उद्‌भव 22

कहानी के सिद्धान्त और स्वरूप–2

5. कहानी में वस्तु और शिल्प 30
6. कहानी की भाषिक संरचना 34
7. कहानी का वर्गीकरण, औचित्य और सीमाएँ 42
8. कहानी की आलोचना की परंपरा 49

विश्व साहित्य में कहानी

9. यूरोप में कहानी 57

10. अमेरिका में कहानी 68

11. एशिया में कहानी 78

12. लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी 85

भारतीय साहित्य में कहानी

13. भारत में कथा-कहानी 91

14. नवजागरण काल में भारतीय कहानी 99

15. राष्ट्रीय आंदोलन के दौर में भारतीय कहानी 108

16. स्वाधीनता के बाद भारतीय कहानी का विकास 115

हिन्दी साहित्य में कहानी

17. प्रेमचन्द पूर्व और प्रेमचन्द कालीन हिन्दी कहानी 122

18. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी 129

19. नई कहानी और साठोत्तरी कहानी 134

20. समकालीन हिन्दी कहानी 141

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

कहानी : स्वरूप और विकास

M.H.D.-9

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. कथा और आख्यान के तुलनात्मक स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 1

प्रश्न 2. कहानी और रेखाचित्र के साम्य-वैषम्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-20, प्रश्न 3

प्रश्न 3. नवजागरण कालीन भारतीय कहानी के वैशिष्ट्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-104, प्रश्न 1, पृष्ठ-105, प्रश्न 2, प्रश्न 3

प्रश्न 4. आधुनिक कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-103, प्रश्न 3

प्रश्न 5. स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कहानी का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-136, 'स्त्री-जीवन का नया यथार्थ', अध्याय-20, पृष्ठ-147, 'स्त्री समाज'

प्रश्न 6. हिन्दी-कहानी की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-44, प्रश्न 1

प्रश्न 7. अफ्रीकी कहानीकारों की कहानियों का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-87, 'प्रमुख अफ्रीकी कहानीकार', पृष्ठ-89, (अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न)

प्रश्न 8. रूसी कहानियों का सामान्य परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-59, 'रूस में कहानी'

प्रश्न 9 हिन्दी कहानी के विकास में पत्रिकाओं के योगदान की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-28, प्रश्न 7, पृष्ठ-29, प्रश्न 8

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) हिन्दी कहानी के सामाजिक सरोकार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-119, प्रश्न 4

(ख) रवीन्द्रनाथ टैगोर

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-113, प्रश्न 1

(ग) यशपाल

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-131, 'यशपाल'

(घ) फ्रांसीसी कहानी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-61, प्रश्न 1

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

कहानी : स्वरूप और विकास

M.H.D.-9

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. कथा और आख्यान के संबंधों को स्पष्ट करते हुए आख्यान के विविध रूपों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'कथा और आख्यान का अर्थ', 'परस्पर संबंध और विविध रूप'

प्रश्न 2. आधुनिक विधा के रूप में कहानी के स्वरूप एवं वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-9, 'आधुनिक विधा के रूप में कहानी'

प्रश्न 3. चरित्र प्रधान कहानियों के स्वरूप एवं विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

उत्तर–जिन कहानियों में चरित्र चित्रण की प्रधानता होती है, वे चरित्र प्रधान कहानियों के वर्ग में आती हैं। चरित्र प्रधान कहानियों में लेखक का ध्यान पाठकों को घटनाओं के विस्तार में न उलझाकर कहानी के पात्रों के चरित्र-निरूपण की ओर रहता है। इन कहानियों का मुख्य धरातल मनोविज्ञान होता है। चरित्र-प्रधान कहानियाँ घटनाओं को छोड़कर पात्र के चरित्र और मनोवृत्ति अर्थात् मनुष्य के भीतर की भावनाओं, संवेदनाओं, विचारों एवं क्रिया-प्रतिक्रियाओं को बहुत ही सूक्ष्म ढंग से व्यक्त करती हैं। इनमें व्यक्ति के अन्तर्मन का चित्रण होता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि चरित्र प्रधान कहानियों में पात्रों के माध्यम से व्यक्ति के भीतर पनप रही आत्म पीड़ा, दया, खुशी, प्रेम, ईर्ष्या, संकोच, संघर्ष, सहानुभूति एवं महत्त्वाकांक्षा इत्यादि अत्यन्त सूक्ष्म भावों को व्यक्त किया जाता है। मूलत: इन कहानियों में पात्रों के मनोगत भावों और मानसिक संघर्षों को महत्व मिला हैं।

इसमें लेखक का ध्यान पात्रों के चरित्र निरूपण की ओर ही अधिक रहता है। इसमें मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि में चरित्र की विभिन्न सूक्ष्मताओं का उद्घाटन लेखक या पात्र स्वयं करता है। कभी-कभी दूसरे पात्रों के माध्यम से मुख्य पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ उभरकर सामने आती है। चरित्र प्रधान कहानी में चरित्र विश्लेषण को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

चरित्र प्रधान कहानियों में कहानीकार मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग करता है और पात्रों के आंतरिक द्वंद्व को प्रस्तुत करता है। कथानक की आवश्यकता के अनुसार रचनाकार डायरी शैली, आत्मकथात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, फंतासी शैली का भी प्रयोग करता है।

जिन कहानियों में किसी पात्र के चरित्रीकरण को कहानी की कथावस्तु का आधार बनाया जाता है, वे चरित्र प्रधान कहानियाँ होती हैं, इन कहानियों में मनोवैज्ञानिकता का पुट ज्यादा रहता हैं। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था', प्रेमचंद की 'कफन', प्रसाद की 'व्रत भंग' तथा 'गुण्डा' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-7, पृष्ठ-44, 'चरित्र प्रधान कहानियाँ'

प्रश्न 4. कहानी का वर्गीकरण करते हुए जनवादी कहानी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-42, 'कहानी के कुछ वर्गीकरण', पृष्ठ-43, 'जनवादी कहानी'

प्रश्न 5. फ्रांसीसी कहानी के विकासक्रम पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-61, प्रश्न 1

प्रश्न 6. अफ्रीकी कहानी का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-88, प्रश्न 3

प्रश्न 7. भारतीय कहानी में वर्णित राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-112, प्रश्न 4

प्रश्न 8. नई कहानी के स्वरूप एवं वैशिष्ट्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-136, प्रश्न 1

प्रश्न 9. वैश्विक परिवेश में कहानी की आलोचना की परम्परा पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-53, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) यशपाल

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-131, 'यशपाल'

(ख) नई कहानी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-134, 'नई कहानी'

(ग) पंचतंत्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-95, प्रश्न 4

(घ) समकालीन कहानी में अप्रवासी समाज

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-148, 'अप्रवासी समाज'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

कहानी : स्वरूप और विकास

कहानी के सिद्धान्त और स्वरूप

कथा और आख्यान के विभिन्न रूप

1

परिचय

कहानी के स्वरूप को जानने तथा समझने से पूर्व उसके मूल रूप 'कथा' को जानना आवश्यक है। 'कथा' और 'आख्यान' कहानी के लिए ही प्रयुक्त किए जाने वाल शब्द हैं और व्युत्पत्ति की दृष्टि से मूल स्वरूप में जिनके एक ही मायने हैं। कहानी के लिए सातवीं सदी में 'कथा' और 'आख्यायिका' शब्द का भी प्रयोग किया गया, जोकि अर्थ-निरूपण में आए परिवर्तन को दर्शाता है। प्रस्तुत अध्याय में कहानी के स्वरूप तथा 'कथा', 'आख्यान' और 'आख्यायिका' के साथ उसके संबंध तथा उसके अर्थ-निरूपण पर विचार किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

'कथा' और 'आख्यान' का अर्थ, परस्पर संबंध और विविध रूप

'कथा' और 'आख्यान' का अर्थ

'कथा' और 'आख्यान' अर्थ की दृष्टि से पर्यायवाची माने गये हैं। जहां व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'कथा' शब्द 'कथ्' धातु से निर्मित हुआ है, जिसका अर्थ है कथन का वर्णन करना। वहीं 'आख्यान' के मूल में 'ख्या' धातु है, जिसका अर्थ है 'विवरण', 'व्याख्या', 'कहना', 'वर्णन करना' तथा 'अति-प्रसिद्ध'।

'कथा' का मूल स्वरूप

'कथा' की मूल प्रकृति और पहचान इसके तीन मुख्य तत्त्वों 'घटना', 'समयानुक्रम' और 'दिक्' यानी 'स्पेस' पर निर्भर करती है। 'घटना' अर्थात जो 'घटित' होता है। 'घट' से 'घटित' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है, जिसमें निर्मित, आकस्मिकता, संयोग और अप्रत्याशित होने के तत्त्व विद्यमान हैं। भूकम्प, युद्ध, वायुयान दुर्घटना, अचानक किसी को कुछ प्राप्त हो जाना आदि सुखद या दु:खद घटनाओं के उदाहरण हैं, जो मनुष्य जीवन में घटती रहती हैं। फिर भी जीवन में 'घटनाओं' के स्थान पर 'कार्य-व्यापारों' की प्रमुखता रहती है, क्योंकि 'कार्य-व्यापार' सहज तथा जीने-मरने के लिए अनिवार्य होता है और यही कर्म-व्यस्तता ही जिन्दगी कहलाती है, जिसमें घटनाएं एक प्रकार के तूफान के समान होती हैं, जो व्यक्ति की समुद्र-यात्रा रूपी जीवन में आती हैं।

यद्यपि 'कथा' में 'घटनाएं' ही प्रमुख होती हैं और कार्य-व्यापार गौण, क्योंकि कार्य-व्यापार 'घटनाओं को कथा से जोड़ने का कार्य ही करते हैं, जोकि समय के अनुक्रम के आधार पर गुंथी होती हैं और यह समय क्रम व्यक्ति के जन्म से मृत्युपर्यंत निरंतर चलता है। अत: इसी 'ऐतिहासिक' या प्राकृतिक कालक्रम में गुंथी हुई घटनाओं को 'कथा' कहा जाता है।

'दिक्' अथवा 'स्पेस' भी 'काल' के समान ही कथा के लिए अनिवार्य होता है, क्योंकि घटनाएं 'दिक्' में ही घटित होती हैं, इसलिए वे प्राय: मनुष्य के अनुभव जगत के परे की जगहें होती हैं, जिन्हें प्राय: कल्पना-प्रसूत भी माना जाता है। इसी कारण 'दिक्' की अनिवार्यता 'कथा' में होते हुए भी श्रोता के लिए उसका महत्त्व नहीं होता है।

'कथा' के लिए 'घटनाओं' का कौतूहलपूर्ण, आकस्मिक, अप्रत्याशित एवं नवीन होना आवश्यक है, ताकि कथा सुनाने वाले और सुनने वाले की उपस्थिति में श्रोता की आंखों में 'फिर क्या हुआ'? का भाव बना रहे।

'कथा' की प्राचीनता

'कथा' के मौखिक रूप की प्राचीनता के संदर्भ में नृतशास्त्रियों को पुरापाषाण युग के आदिम मानव की खोपड़ियों से कहानी

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

कहने-सुनने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं, जहां दिन भर शिकार करने के बाद रात को पशुओं से बचाव हेतु चारों तरफ आग जलाकर समूह में बैठकर दिन भर के शिकार के अनुभवों को सुनाने को रूप में 'कथा' की उत्पत्ति मानी गयी है। धीरे-धीरे इन अनुभवों में कल्पना का मिश्रण होने तथा बाद में मात्र शिशुओं के मनोरंजन हेतु किसी बूढ़े आदिमानव द्वारा नयी-नयी कथा गढ़ने की प्रवृत्ति से 'कथा' कहने की कला का विकास होता गया होगा। यह मात्र अनुमान पर ही आधारित है कि इन परिस्थितियों में कथा का जन्म हुआ होगा।

'कथा' का मूल उद्देश्य

अनुमान के आधार पर कथा पहले मनोरंजन का कार्य करती थी, किन्तु धीरे-धीरे इसका प्रयोग उपदेश देने तथा 'मूल्यों' की अभिव्यक्ति के लिए किया जाने लगा। पं. विष्णु शर्मा द्वारा रचित 'पंचतंत्र' इसका मुख्य उदाहरण है, जिसकी रचना एक राजा के जड़बुद्धि, अविनीत और मूर्ख राजकुमारों को राजनीति तथा व्यवहार-नीति की शिक्षा देने के लिए हुई। यह कथाओं का संकलन है जो पांच प्रकरणों में विभक्त है तथा इसकी विशेषता यह है कि इसमें पशु-पक्षियों की कथाएं हैं, जहां वे मनुष्य की भाषा बोलते हुए उन्हीं की तरह आचरण करते हैं। 'पंचतंत्र' का कौतूहल तत्त्व ही उसकी कथा को आगे बढ़ाता है, जिसमें प्रयोजन ही प्रधान है। 'पंचतंत्र' की कथाओं के मुख्य कथक विष्णुशर्मा और श्रोता राजकुमार हैं, जिसकी कथा छह महीने बीतते-बीतते समाप्त हो जाती है और राजनीति के उपदेश राजकुमारों के मन पर अंकित हो जाते हैं। इस प्रकार 'कथा' की उपयोगिता तथा 'कथाकार' का ज्ञान भी कथा के परवर्ती विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

कथा का मौखिक रूप लिखित परंपरा का आरंभ

कथा की लिखित परंपरा के आरंभ का कोई निश्चित तथा प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है, फिर इस शृंखला में वाल्मीकि रचित 'रामायण' तथा महर्षि व्यास द्वारा लिखित 'महाभारत' संभवत: प्रथम लिखित कथा या आख्यान मानी जाती हैं।

महाभारत

ईसा पूर्व सन 800-100 'महाभारत' की रचना का काल माना जाता है, जिसका प्रथम पाठ 'जय' (800 ई.पू.) में, द्वितीय पाठ 'भारत' (500 ई. पू.) में तथा तृतीय पाठ 'महाभारत' (200-100 ई.पू.) में रचा गया। उग्रश्रवा ने यह कथा बारह वर्षों तक जारी महर्षि शौनक के यज्ञ-सत्र में उपस्थित ब्रह्मर्षियों को सुनायी थी तथा उन्होंने यह कथा महर्षि वैशम्पायन से सुनी थी और महाभारत की रचना के उपरांत व्यास जी ने अपने शिष्यों को इस ग्रंथ के अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ब्रह्मा जी से अपने इस महाकाव्य की रचना की बात कही तो उन्होंने व्यास जी से अपने काव्य के लेखन हेतु गणेश जी का सहयोग लेने की बात कही। व्यास जी द्वारा स्मरण करते ही गणेश जी उनके पास जा पहुंचे और लेखक बनने से पूर्व उन्होंने ग्रंथ को बिना रुके लिखवाने की शर्त व्यास के समक्ष रख दी तो व्यास जी ने भी श्लोकों का अर्थ समझकर ही लिखने की एक शर्त गणेश के समक्ष रख दी, जिसके उपरांत ही 'महाभारत' की रचना की गई, जोकि भारत के इतिहास का जाज्वल्यमान दीपक है, जो लोगों के अन्त:करण से सम्पूर्ण मोह के अंधकार को दूर करके अंतरंग को ज्ञानालोक से प्रकाशित कर देता है।

महर्षि व्यास ने 'महाभारत' का प्रवचन मनुष्यलोक में किया तथा उन्होंने इससे पूर्व सर्वप्रथम अपने पुत्र शुकदेव को इस ग्रंथ का अध्ययन कराते हुए अपने अन्यान्य शिष्यों को इसके उपदेशों से अवगत कराया। देवर्षि नारद ने भी इस ग्रंथ को देवताओं को तथा असित-देवल ने पितरों को श्रवण कराया और जनमेजय के नागयज्ञ के समय व्यास जी की आज्ञानुसार ही वैशम्पायन ने हजारों ब्राह्मणों को महाभारत ग्रंथ का श्रवण कराया था।

निष्कर्ष रूप में यद्यपि महाभारत की रचना श्रुति परंपरा के रूप में हुई थी तथापि उसके व्यापक प्रचार के उद्देश्य हेतु महर्षि व्यास ने गणेश जी की सहायता से इसे लिखित रूप प्रदान किया, जिसके उपरांत यह 'वाचन परंपरा' का एक अभिन्न अंग बन गयी।

'बड्डकहा' (बृहद्कथा)

सर्वप्रथम 'बड्डकहा' (बृहद्कथा) भगवान शिव ने पार्वती को सुनाई थी। तदन्तर गुणाढ्य ने इसके सात लाख श्लोकों को पैशाची-प्राकृत भाषा में लिखित रूप प्रदान किया। इसके पश्चात् राजा सातवाहन ने नष्ट होने से बचे हुए एक लाख श्लोकों का संस्कृत भाषा में अनुवाद कराया, जिसके क्रमश: संस्कृत और प्राकृत में कई अनुवाद हुए। राजा सातवाहन तथा गुणाढ्य का समय ई.पू. 495-490 है तथा 'बड्डकहा' का ग्यारहवीं सदी ईसवी में 'कथासरित्सागर' के रूप में निर्मित पाठ आज भी उपलब्ध है।

'आख्यान' की प्राचीन अवधारणा और उसके विभिन्न रूप

'आख्यान' का शाब्दिक अर्थ है कथन, निवेदन, कथा-कहानी, प्रतिवचन या उत्तर। आख्यान वैदिक सुपर्ण और मैत्रावरूण से सम्बद्ध कथा का ही नामान्तर है, जिसे 'महाभारत' आदि इतिहास ग्रंथ में आख्यान काव्य के रूप में मान्यता प्राप्त है। 'कथा' और 'आख्यायिका' को गद्यकाव्य के भेद मानते हुए भी इन्हें 'आख्यान' जाति का ही माना गया है, क्योंकि दण्डी के समय 'आख्यान' जातिवाचक शब्द था तथा 'महाभारत' व 'रामायण' में अनेक आख्यानों व उपाख्यानों का संकलन होने के कारण इनको आख्यान की श्रेणी में माना गया। इसलिए 'पंचतंत्र', 'हितोपदेश', 'कथासरित्सागर' आदि भी 'उपाख्यान' ही माने जाते हैं।

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

'कथा' की नयी अवधारणा

'कथा' के उदाहरण के रूप में सुबन्धु की 'वासवदत्ता', बाणभट्ट की 'कादंबरी' तथा दण्डी का 'दशकुमारचरित' लिये जाते हैं, जबकि बाणभट्ट की 'हर्षचरित' को 'आख्यायिका' की श्रेणी में रखा जाता है।

सुबन्धु कृत 'वासवदत्ता'

'रोमांस' का विकास यद्यपि यूरोप में बाद की घटना है, तथापि भारत में इसका विकास 'बृहत्कथा' से माना जाता है, जोकि यूरोपीय 'रोमांस' की सारी विशिष्टताओं से पूर्ण है। प्रेम, साहसाभियान, घटनाएं, अतिलौकिक घटनाएं, आकार, पात्र, परिवेश, काल तथा गद्य के रूप में प्रस्तुति के गुणों के आधार पर सन 500 ई. या इससे पूर्व सुबन्धु द्वारा रचित 'वासवदत्ता' को 'कथा' की श्रेणी में रखा जाता है। सुबन्धु ने गुणाढ्य से अलग अपनी कथा को गद्य में प्रस्तुत करते हुए उसे उन साहित्यिक विशेषताओं से युक्त कर दिया जिस पर केवल कवियों का ही एकाधिकार था। कथ्य की दृष्टि से 'वासवदत्ता' में रोमांस, प्रेम तथा साहसाभियान की प्रमुखता है, जिसमें समय का यथार्थ और विश्वास भी अभिव्यक्त हुआ है, जोकि श्लेष तथा अनेक प्रकार के अलंकारों के वाग्जाल से पूर्णत: आच्छादित है।

कादम्बरी

'कादम्बरी' गुणाढ्य की बृहत्कथा की एक कथा 'मकरन्दिकोपाख्यान' पर आधारित है, जिसके कथासंसार को बाणभट्ट ने अपने 'विजन' से नवीन रूप प्रदान किया है। इसका कथाविन्यास नवीन, अद्भुत तथा आश्चर्यचकित करने वाला है, जिसकी अनेक कथाएं परस्पर गुंथी हुई होकर भी एकल इकाई के रूप में परिणत होने में सफलता प्राप्त करती हैं। 'कादम्बरी' में उज्जयिनी के राजा तारापीड़, उसके मंत्री शुकनास, राजपुत्र चन्द्रापीड़ और मंत्रिपुत्र वैशम्पायन की कथा है, जोकि कथा के भीतर कथा की जटिल योजना द्वारा पूर्ण विचारधारा को एकल कथा-संसार के रूप में रूपायित करती है। बाणभट्ट द्वारा किया गया यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है, क्योंकि इससे पूर्व एक बड़ी कथा में छोटी-छोटी कथाओं को एक-दूसरे के अंदर नियोजित करके उसे बड़ी और प्रकाशमान 'अभिव्यक्ति' देने का कार्य किसी अन्य रचनाकार ने नहीं किया था। फिर भी बाणभट्ट कथा में घटित प्रसंगों की विश्वसनीयता के प्रति भी पूर्ण सचेत हैं, क्योंकि उनको अपने शंकालु प्रवृत्ति के श्रोता समाज को आवश्वस्त करने के लिए निरंतर सजग रहना पड़ता था।

हर्षचरित

'हर्षचरित' बाणभट्ट की दूसरी महत्त्वपूर्ण रचना है, जिसमें उन्होंने वर्धन वंश के प्रतापी सम्राट तथा महान शासक श्रीहर्ष के चरित्र को प्रस्तुत किया है। बाणभट्ट उसके दरबार का राजकवि था, जो युवावस्था में मार्ग से भटकने से मिली बदनामी के कारण कहीं भी राजाश्रय प्राप्त नहीं कर सका था और श्रीहर्ष के एक अधिकारी कुमार कृष्ण की सिफारिश से श्रीहर्ष के दरबार में जगह प्राप्त कर पाया था और उसे राजकवि बनाया गया था, तदुपरान्त बाणभट्ट ने श्रीहर्ष के चरित्र को ऐतिहासिक रूप में प्रस्तुत करते हुए 'हर्षचरित' की रचना की, जोकि गद्य के रूप में पूरे वैभव, प्रकृति तथा अन्य प्रकार के वर्णनों के साथ उपस्थित है। इसमें श्रीहर्ष के चरित्र को ऐतिहासिक मानते हुए इतिहासकारों ने इसकी घटनाओं को इतिहास में ज्यों-का-त्यों स्वीकार कर लिया है। इसकी भाषा को 'गद्य' के काव्यगुणों से युक्त होने के कारण आचार्य इसे 'आख्यायिका' मानते हैं।

दशकुमारचरित

बाणभट्ट के पश्चात संस्कृत कथाकार दण्डी ने 'दशकुमारचरित' की रचना की, जोकि तीन भागों में विभक्त है प्रथम भाग 'पूर्वपीठिका' में पांच तथा दूसरे भाग 'चरित' में आठ उच्छवास हैं। तृतीय भाग 'उत्तर-पीठिका' में अष्टम् उच्छवास का उपसंहार है। 'दशकुमारचरित' की कथा भी यद्यपि लुभावनी काव्यात्मक वस्तु तथा चरित्र वर्णनों से पूर्ण है, तथापि इन कथाओं का विषय सातवीं शताब्दी और उसके पूर्व के समय को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करता है। राजनीति, समाज, व्यावहारिक ज्ञान, प्रेम, रमणीहरण, साहसाभियान तथा यूरोपीय 'रोमांस' के कथा गुणों से 'दशकुमारचरित' पूर्णत: सम्पन्न है। इसकी 'कथा' में दस राजकुमारों की अनुभव कथाओं को कथापात्र राजकुमार राजवाहन द्वारा आपस में सुसम्बद्ध करके एक कथानक का निर्माण किया गया है। यद्यपि 'दशकुमारचरित' का कथानक आधुनिक यथार्थवाद की कसौटी पर खरा नहीं उतरता तथापि कथा-विन्यास की दृष्टि से इसमें कहानी और उपन्यास की संरचना के महत्त्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता। इसकी कथा-संरचना के विकास के रूप में हिन्दी में रूद्र काशिकेय की 'बहती गंगा' (उपन्यास), कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया' (कहानी) जैसे उदाहरण देखे जा सकते हैं।

कथा-रचना की भारतीय परंपरा का अवसान

यह साहित्यिक इतिहास की त्रासदी है कि बाणभट्ट और दण्डी के पश्चात कथा-रचना की भारतीय परंपरा आगे विकसित नहीं हो सकी। यद्यपि इसका एक प्रयास दसवीं सदी में धनपाल ने 'तिलकमंजरी' के रूप में किया था, तथापि इसे 'कादम्बरी' का विकास नहीं माना गया, क्योंकि इस समय तक संस्कृत राजदरबारों और पंडितों की भाषा बनकर रह गयी और दसवीं शताब्दी के पश्चात संस्कृत को राजाश्रय प्रदान करने वाले हिन्दू राज्य भी समाप्त हो गए तथा संस्कृत के बाद फारसी के केन्द्रीय सत्ता में आने के बाद वही काव्य-रचना का माध्यम बनकर उभरी। उत्तरी भारत की जनता का लगाव जनभाषा से होने के कारण जनबोलियों में ही साहित्य की रचना होने लगी, जिसे राजदरबारों में भी प्रश्रय

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

मिलने लगा। अठारहवीं शताब्दी में ब्रजभाषा और खड़ी बोली में संस्कृत 'योगवशिष्ठ', 'बेताल पंचविंशति' और 'सिंहासनद्वात्रिंशतिका' का संस्कृत गद्यकथा पुस्तकों में रूपांतर होने पर भी कोई मौलिक गद्यकथा पुस्तक ब्रजभाषा या हिन्दी की अन्य भाषा में नहीं लिखी गई तथापि 'दस अवतार भाषा' (1744), 'पद्मपुराण का भाषानुवाद' (1761), 'नौतर्जे मुरस्सा' (1798) इस काल में लोकप्रिय रहीं। उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व खड़ी बोली हिन्दी में 'सबरस' (मुल्ला वजही सन 1636 में) तथा 'रानी केतकी की कहानी' (सैयद इंशा अल्ला खां सन 1800) दो मौलिक गद्यकथा पुस्तकें प्राप्त होती हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 'हिन्दी' गद्य के विकास के साथ ही 'गद्यकथा' ने नवीन रूप में 'उपन्यास' का आकार ग्रहण किया और यह गुणाढ्य, विष्णुशर्मा, सुबन्धु आदि की भारतीय कथा-परंपरा से नहीं जुड़ता है, जोकि एक साहित्यिक त्रासदी ही कही जा सकती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'कथा' और 'आख्यान' अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके मूल स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर यद्यपि 'कथा' और 'आख्यान' अर्थ के आधार पर एक-दूसरे के पर्यायवाची माने जाते हैं, जिसमें 'कथा' शब्द व्युत्पति की दृष्टि से संस्कृत की 'कथ्' धातु का मिश्रित रूप है, जिसका अर्थ है 'कथन' या 'वर्णन' करना, जबकि 'आख्या' की मूल धातु 'ख्या' है, जिसका अभिप्राय भी 'विवरण', 'वर्णन' या 'व्याख्या' करना है जोकि किसी प्रसिद्ध अर्थ के संदर्भ में प्रायः प्रयुक्त होता रहता है।

मूल स्वरूप कथा के मूल स्वरूप को जानने तथा इसकी पहचान हेतु इसके प्रमुख तीन तत्त्वों 'घटना', 'समयानुक्रम' तथा 'दिक्' को जानना जरूरी है। 'घटना' शब्द जहां 'घटित' होने के संदर्भ से जुड़ा हुआ है, जो प्रायः आकस्मिकता, संयोग और अप्रत्याशित स्थिति से संबंधित होता है, तो वहीं 'समयानुक्रम' में घटनाओं के समय का एक ऐतिहासिक क्रम आपस में इस प्रकार से गुंथा होता है कि वह 'कथा' को इसकी घटनाओं के समयानुक्रम से जोड़ते हुए जीवन के प्रमुख कार्य-व्यापारों को भी दर्शाता चला जाता है। मनुष्य के जीवन में प्रायः प्रमुखता कार्य-व्यापारों' की होती है 'घटनाओं' की नहीं, क्योंकि ये घटनाएं जीवन के सामान्य कार्य-व्यापारों को एक-दूसरे से जोड़ने का ही कार्य हैं और श्रोता इनको ही 'घटनाओं' के रूप में सुनने के लिए लालायित रहता है। इसलिए 'ऐतिहासिक' या प्राकृतिक कालक्रम में गुंथी हुई घटनाओं को जिनमें 'कार्य-व्यापार' भी निहित रहते हैं 'कथा' के नाम से जाना जाता है।

'दिक्' या 'स्पेस' भी कथा का महत्त्वपूर्ण एवं अभिन्न तत्त्व है, जोकि मानव अनुभव की सीमाओं को अस्वीकृत करके उन्हें वास्तविक जीवन से जोड़ने का प्रयास करता है। यह 'दिक्' श्रोता में यद्यपि जिज्ञासा भाव को अनिवार्यतः उजागर करने का कार्य करता है तथापि यह श्रोता के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, क्योंकि वास्तविकता तो यह है कि 'कथा' के लिए 'घटनाएं' आवश्यक तो होती हैं, किन्तु उनमें फिर भी नवीनता, आकस्मिकता और अप्रत्याशित होने की संभावना अवश्यंभावी होती है, क्योंकि इसी के कारण श्रोता कथा से आदि से अंत तक जुड़ा रहता है और उसके 'मौखिक' होने की स्थिति में तो श्रोता की आंखों में 'आगे क्या हुआ?' की स्थिति को जानने का एक उत्सुकतापूर्ण भाव सदैव बना रहता है और इसलिए इन सभी 'घटनाओं' के समाप्त होने पर 'कथा' भी स्वतः समाप्त हो जाती है, क्योंकि 'कथा' में विद्यमान 'घटनाएं' कार्य-व्यापार के आधार पर श्रोता को जोड़े रखने का कार्य करती हैं।

प्रश्न 2. 'कथा' की प्राचीनता का उल्लेख करते हुए उसके मूल उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर कथा अपने मौखिक रूप में अत्यंत प्राचीन है जोकि मनुष्य की सहज तथा उसकी जन्मजात प्रवृत्ति से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। यह माना जाता है कि मनुष्य के जन्म के साथ ही कथा का भी उदय हुआ था, क्योंकि आदिम मानवों की प्राप्त खोपड़ियों के अध्ययन से पुरा-पाषाण युग में कथा के कहने-सुनने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि आदिमानव शिशुओं के मनोरंजन के लिए अपने वास्तविक शिकार के अनुभवों के साथ कल्पना का मिश्रण करके नयी-नयी कथाओं का निर्माण करता होगा और कालांतर में यही प्रक्रिया धीरे-धीरे 'कथा' के रूप में विकसित होकर उभरकर सामने आयी।

'कथा' का मूल उद्देश्य प्राचीन समय में कथा का प्रमुख कार्य मनोरंजन करना होता था, किन्तु कालांतर में अनेक परिवर्तनों के कारण कथा का उपयोग भी उपदेश देने या मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए किया जाने लगा। वैदिक काल में निर्मित कथा के रूप इसका प्रमुख उदाहरण हैं, जिनमें से पंडित विष्णु शर्मा द्वारा रचित 'पंचतंत्र' की रचना इसका एक अनन्य उदाहरण है। 'पंचतंत्र' की रचना की पृष्ठभूमि में एक राजा के जड़बुद्धि, अविनीत, मूर्ख तथा उच्छृंखल राजकुमारों को राजनीति तथा व्यवहार नीति की शिक्षा देना विद्यमान था। यह कथा मूल रूप में पांच प्रकरणों में विभक्त है तथा इसकी परस्पर गुम्फित अनेक कहानियों का एक ही मूल विषय है और इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें पशु-पक्षियों की कथाएं हैं, जो मनुष्य की तरह भाषा का प्रयोग करते हुए उन्हीं के समान व्यवहार भी करते हैं।

'पंचतंत्र' की कथाओं का मुख्य कथक विष्णु शर्मा तथा इसके श्रोता राजकुमार हैं। 'पंचतंत्र' की कथा में विद्यमान घटनाओं

ww.neerajbooks.com